ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 2 | OCTOBER - 2017

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

डॉ.सादिका नवाब 'सहर' के कहानियों में आधुनिक बोध
("मन्नत" कहानी संग्रह के विशेष संदर्भ में)

प्रा.डॉ.सौ.सुरैया इसुफअल्ली शेख.
असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक,
अध्यक्षा–हिंदी विभाग, मा.ह.महाडिक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोडनिंब .ता.माढा.जि.सोलापुर. (महाराष्ट्र).

प्रस्तावना :

डॉ.सादिका नवाब जी का जन्म गुंटूर (आंध्रप्रदेश) में हुआ । वे एक कर्मठ, परिश्रमी, हंसमुख साहित्यकार है । अपनी कल्पनाशिलता एवं लेखन कला की वजह से उन्होंने हिंदी, उर्दू, तेलगू, अंग्रेजी साहित्य में अपने लिए एक विशिष्ठ स्थान बना लिया है।

उनकी हिंदी, उर्दू, तेलगू, अंग्रेजी में अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है। उनको बाईस पुरस्कार सम्मान प्राप्त है। मॉरिशस, दुबई, जेद्दा की विदेश यात्राएँ उन्होंने की है।

उनकी रचनाएँ प्रेरणास्पद एवं समाज में होने वाले अन्याय के प्रति आवाज उठाने में सक्षम है। इक्कीसवीं सदी के हिन्दी कहानी साहित्य में चित्रित आधुनिक बोध का अपना विशेष स्थान है। आधुनिकता समय सापेक्ष है। जो नया है, अभी का है। वही आधुनिक है वह एक ऐसी प्रकिया है जिसमें अनेक मूलभूत परिवर्तन निहित होते है। आधुनिकता ही अवधारणा में निहित मूल्य परम्परागत बातों को नकारकर नए मूल्यों को स्वीकार करने में विश्वास रखते है। इक्कीसवीं सदी के कथा साहित्य में डॉ. सादिका नवाब ' सहर ' का नाम एक सशक्त हस्ताक्षर के रुप में उभरकर सामने आ रहा है। उनके कथा साहित्य में आधुनिक जीवन का शोषण एवं संघर्ष यथार्थ रूप में अभिव्यक्त हुआ है। उनकी कहानियों की अलग पहचान, विशेषता है। सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, धर्म व्यवस्था, साम्प्रदायिक व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। डॉ.सादिका नवाब ने इन व्यवस्थाओं का विरोध किया है। आधुनिक व्यवस्था से वे पूरी तरह से असंतुष्ट है, क्योंकि आधुनिक व्यवस्था एक विशेष प्रकार के लोगों के हित में काम कर रही है। इसलिए उनकी कहानियों में व्यवस्था का खुला विरोध मिलता है।

मन्नत ' कहानी संग्रह में लगभग तेरह कहानियॉ है। सभी कहानियों में आधुनिक बोध दिखाई देता है। ' मन्नत ' कहानी की नायिका मुक्ता के माध्यम से आधुनिकता का बोध होता है। सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ यहॉ आवाज़ उठाया गया है। केवल मुक्ता को माहावारी न आने के कारण उसे कोई अपनाता नहीं। जिंदगी भर वह कुँआरी रहती है। समाज में उसे कोई स्थान नहीं ऐंसी सामाजिक व्यवस्था का पर्दाफाश किया गया है। मुक्ता के मन में मानवीय भावना छिपी होती है। जहॉ मानवीय विद्रूपताएँ अपने नग्नतम रूपों में अतिरेक के स्तर पर जाकर बिलबिलाने लगती है, जहॉ यथार्थ की रूह कांप उठ़ती है। मुक्ता की जिन्दगी तबाह हो जाती है। जिंदगी के प्रती उसके मन में नफरत पैदा होती है। इसलिए तो वह अपने प्रेमी बबन का सर फोड़ती है। मुक्ता का अंत करुन होता है। अंधश्रध्दा के साथ–साथ बिघड़ी हुई सामाजिक व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है।

' संतवांसा' एक मौलिक रचना है। कहानी का नयक युसूफ अपनी बीवी साबिरा के साथ छोटे से शिशू को अस्पताल में ले जाता है लेकिन जब उस शिशू को 'इन्क्यूबेटर ' में रखने के लिए तीस हजार रूपये की जरुरत पड़ती है तो रुपयों के अभाव के कारण युसूफ मजबूर होता है, लेखिका का भी उसे बचाने का प्रयास था लेकिन उसे बचाने में वह असमर्थ हो जाती है, तो दुसरे दिन जब वह काजूवाडी की झोपड़–पट्टि में चली गयी उस समय शिशू मरा हुआ दिखाई देता है। लेखिका की बेचैनी बढ़ जाती है, पश्चाताप की भावना उमड़ आती है। यदि सही समय पर अस्पताल ले जाते तो उसकी जान बच सकती थी। अंत में वह आत्म–ग्लानि से मुक्त हो जाती है। जीवन का वास्तविक सत्य इसमें उजागर हुआ है। युसूफ के पहली बीवी के पास रुपये थे साबिरा चाहती तो उसके पास से पैसे ले लेती लेकिन उसक झूठ़ा अहंकार जागृत हुआ और उसने अपने बच्चें की जान गवाई। एक तरफ गरीबी और दूसरी तरफ झूठा अहंकार तथा खोखली सभ्यता की ओर लेखिका ने प्रकाश ड़ाला है।

इक्कीसवीं सदी के कथा साहित्य में डॉ.सादिका नवाब का योगदान सराहनीय है। उनके कथा साहित्य में इक्कीसवीं सदी में पाई जानेवाली जमाम विसंगतियॉ दृष्टिगोचर होती है। डॉ.सादिका जी ने केवल समस्याओं को ही नहीं उकेरा हैं बाल्कि उनके समाधान, सकारात्मक सोच की ओर भी संकेत किया है। साथ ही व्यावहारिक रूप और उसके फलितार्थ के विभिन्न प्रसंगो पर व्यक्ति, समाज और धर्म तथा उनके संसार की शल्य परीक्षा की है। इसके साथ ही धार्मिक अन्याय और शोषण की अभिव्यक्ति को नवीन भावभूमी पर प्रस्तुत किया है। डॉ.सादिका जी ने अपनी कहानियों में विषय की विविधता अपने से बाहर निकाल कर कड़वे सच को उगाला है। नारी और नारीतर विषय पर लिखीं उनकी कहानियॉ समाज एवं देश तथा विश्व की समस्या को स्पष्ट करती है। उनका कहानी लिखने का हुनर, भाषा और अनोखापन विशिष्ठ बनता है। कथन भॅगिमा निराली है। उनका व्यक्तित्व अनेक आयामी है। इन कहानियों का कोई न कोई उद्देश जरूर है उनकी पुर्ती भी साथ में की गई है।

' एबॉर्शन' कहानी में एक ओर बच्चा पाने के लालच है तो दूसरी ओर नोकरी करके पैसा कामाने की आस है। इसी बीच कहानी की नायिका सरीना को उसका पति घसीटता हुआ ले जा रहा था। उसके तबीयत की ओर ध्यान नहीं देता, बेचारी बिमार थी लेकिन इम्तिहान देने के लिए उसे बाध्य कर रहा था, जब उसकी मानसिकता बिघड़ जाती है तो उसे अस्पताल ले जाकर एबॉर्शन वाली बात करता है। लेखिका ने बड़े बेबाकी से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। वे बड़े जागरुक और संवेदनशील सार्थक हस्तक्षेप करने वाले विविध आयामी है। साथ ही मध्यवर्गीय, निम्न–मध्यवर्गीय समाज को विस्तार से स्थान दिया है। लेखन में आत्मविश्वास की पैनी धार और शिल्प में भी परिपक्वता आयी है।

डॉ.सादिका नवाब एक आदर्शोन्मुखी लेखिका है। इनका साहित्य कल्पना पर आधारित नहीं है क्योंकि इन्होंने साहित्य का निर्माण ही नहीं किया है। बल्कि जिस यथार्थ को उन्होंने भोगा या समाज में देखा उसे ही साहित्य में चित्रित किया है। साथ ही अपने साहित्य में आदर्श को दिखाया, जिससें पाठक गण प्रेरणा लेकर विभोर हो उठ़ते हैं वे मानवतावादी दृष्टिकोण का साथ लिए है। साहित्य ही नहीं अकादमिक और साहित्येतर विधाओं में भी उन्होंने अपनी कलम का लोहा बनवाया है। महिलाओं को अपनी कहानियों के माध्यम से जागरुक बनाया है। उनका साहित्य समृध्द और उद्देश पूर्ण है।

डॉ.सादिका नवाब के कहानियों का अनुशीलन करने के बाद एक बात स्पष्ट हो जाती है कि वे अपने मुक्ता को समाज के साथ मिलाकर देखती है। अपने अंन्तरंग को सामाजिक आजादी से जोड़ा है। जीवन के विविध क्षेत्रों तक इनकी पैठ है। समाज के अनेक आलम्बन इनकी कहानियों के विषय है। डॉ.सादिका जी ने गॉवो, कस्बे और शहरों में आ रहे उपभोक्तावादी परिवर्तनों को गहराई से परखा और लिखा हैं। गॉव, शहर तथा पुरानी नयी पीढ़ी के संबंध मूल्यगत तनावों को अच्छी तरह से कहानियों में रेखांकित किया है। इस तरह उनके पूरे कथा साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, पारिवारिक परिस्थितियों का चित्रण है।

निष्कर्ष रूप में हम इतना ही कह सकते है कि हिंदी कथा साहित्य में डॉ.सादिका नवाब 'सहर' जी ने अपना एक विशिष्ठ स्थान बनाया है। उन्होंने न केवल हिंदी में लिखा है बल्कि उर्दू, तेलगू और अंग्रेजी में भी अपनी लेखनी चलायी है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में सामाजिक और आर्थिक वस्तुस्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उनके कथा साहित्य में मुख्य रूप से स्त्री अस्मिता का यथार्थ बोध है, लेकिन स्त्री संदर्भ जैसे आर्थिक पहलुओं पर भी उन्होंने गहराई से प्रकाश ड़ाला है। उनकी नजर में सबसे सच्चा धर्म मानवता है।

वे नारी जीवन को एक मार्ग की ओर नई दिशा की ओर मार्गदर्शित करती है। उनके चिंतन और रचना का रेंज बड़ा है। वे हिंदी साहित्य का खजाना है। अपने कथा साहित्य को उन्होंने अपनी ऐसी विशेष पहचान बतायी है। ईमानदारी, सच्चाई लेखन और चिंतन से उन्होंने मानव जाति की सेवा करने का प्रण लिया है। जिससे नया संसार रचने का उन्हें अटल विश्वास है।

प्रा.डॉ.सौ.सुरैया इसुफअल्ली शेख.
असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक,
अध्यक्षा–हिंदी विभाग, मा.ह.महाडिक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोडनिंब .ता. माढा.जि.सोलापुर.(महाराष्ट्र).